खान अब्दुल गफ्फार खान, जिन्हें बाचा खान के नाम से भी जाना जाता है, एक प्रमुख भारतीय स्वतंत्रता सेनानी और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में एक प्रमुख नेता थे। वह अहिंसक प्रतिरोध और भारत के हाशिए पर रहने वाले समुदायों के अधिकारों के एक उत्साही समर्थक थे। खान अब्दुल गफ्फार खान के जीवन और योगदान के बारे में कुछ मुख्य बिंदु इस प्रकार हैं:

प्रारंभिक जीवन:

- खान अब्दुल गफ्फार खान का जन्म 6 फरवरी, 1890 को वर्तमान पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा क्षेत्र में हुआ था, जो उस समय ब्रिटिश भारत का हिस्सा था।
- वह प्रमुख पश्तून नेताओं के परिवार से आते थे और उनका पालन-पोषण राजनीतिक रूप से सक्रिय माहौल में हुआ था।

अहिंसक प्रतिरोध:

- गफ्फार खान महात्मा गांधी के अहिंसक प्रतिरोध के दर्शन से गहराई से प्रभावित थे। उन्होंने राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तन प्राप्त करने के साधन के रूप में अहिंसक सविनय अवज्ञा के विचार को अपनाया और बढ़ावा दिया।
- उन्होंने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ भारत में मुसलमानों को एकजुट करने के लिए उत्तर पश्चिमी सीमांत प्रांत (अब खैबर पख्तूनख्वा) में खिलाफत आंदोलन की स्थापना की।

खिलाफत और सविनय अवज्ञा आंदोलन:

- गफ्फार खान ने खिलाफत आंदोलन और असहयोग आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसका उद्देश्य ब्रिटिश संस्थानों और वस्तुओं का बहिष्कार करना था।
- उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए पश्तून समुदाय को एकजुट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

खिलाफत राष्ट्रीय परिषद का गठन: 1929 में गफ्फार खान ने खिलाफत राष्ट्रीय परिषद का गठन किया, जो ब्रिटिश शासन के खिलाफ अहिंसक प्रतिरोध का एक मंच बन गया।

लाल शर्ट आंदोलन: गफ्फार खान के अनुयायियों, जिन्हें खिलाफत स्वयंसेवकों और बाद में "रेड शर्ट्स" के रूप में जाना जाता है, ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन और अहिंसक प्रदर्शनों में भाग लिया। लाल शर्ट उनके आंदोलन का प्रतीक बन गया.

पश्तून अधिकारों की वकालत: गफ्फार खान पश्तून लोगों के अधिकारों के मुखर समर्थक थे और उन्होंने उनके सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक मुद्दों को संबोधित करने के लिए काम किया।

विभाजन और उसके परिणाम: 1947 में भारत के विभाजन के बाद गफ्फार खान और पश्तून बहुल क्षेत्र पाकिस्तान का हिस्सा बन गये। उन्होंने अहिंसा और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने के अपने प्रयास जारी रखे।

परंपरा:

- खान अब्दुल गफ्फार खान को अहिंसक प्रतिरोध और सामाजिक न्याय के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता के लिए याद किया जाता है। उनके गांधीवादी सिद्धांतों के लिए उन्हें अक्सर "सीमांत गांधी" कहा जाता है।
- उन्हें अपने जीवनकाल के दौरान कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए, जिनमें भारत का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार भारत रत्न भी शामिल है, जिसे उन्हें 1987 में मरणोपरांत प्रदान किया गया था।
- गफ्फार खान की विरासत दुनिया भर में न्याय और मानवाधिकारों के लिए अहिंसक आंदोलनों को प्रभावित करती रही है।

खान अब्दुल गफ्फार खान के जीवन और कार्य ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास और सामाजिक न्याय और अहिंसक प्रतिरोध के व्यापक संघर्ष पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ा है। अहिंसा के सिद्धांतों के प्रति उनका समर्पण और हाशिये पर मौजूद समुदायों के अधिकारों के लिए उनकी वकालत दुनिया भर के लोगों को प्रेरित करती रहती है।